हिंदी साहित्य में व्यंग्य का प्रयोजन

गरिमा चारण

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

व्यंग्य समाजधर्मी अभिव्यक्ति है, इसीलिए उसका सीधा संबंध मानव-जगत की दुर्बलताओं एवं विकृतियों से है तथा उसकी सार्थकता एवं प्रयोजनशीलता ही उसके परिशोधन तथा परिहार में है। वस्तुतः व्यंग्य की यह प्रयोजनशीलता ही उसे हास्य से पूर्णतः पृथक करती है। परिवार, समाज और राष्ट्र के लिये व्यंग्य एक उपयोगी आयुध का कार्य करता है। व्यंग्यकार समाज और शासन में व्याप्त अवगुणों-दुर्गुणों, दुराचारों, दोषों, मिथ्याचारों, पापाचारों, मूर्खताओं और भ्रष्टाचारों आदि पर तीक्ष्ण प्रहार करता है। अपने स्वभावगत आक्रोश, गाम्भीर्य एवं परिवर्तन कर डालने की क्षमता के सहारे व्यंग्य का प्रयोजन जर्जर, कलुषित आचरणों पर आघात कर उसमें सुधार करना होता है। व्यंग्य के इसी उद्देश्य की चर्चा करते हुए डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है -

‘‘उसका लक्ष्य प्रायः मानवीय दुर्बलताओं पर कटाक्ष करके उन्हें उभारना और सुधारना होता है। किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति अरुचि प्रकट करने के और भी तरीके हो सकते हैं, परन्तु व्यंग्य का स्वर ओर पद्धति सर्वथा भिन्न होती है।’’1

इस दृष्टि से व्यंग्य का प्रयोजन जीवन और जगत के क्षेत्रों को दूर कर उनमें सुधार करना परिलक्षित होता हैं। वस्तुतः व्यंग्य की सबसे बड़ी विशेषता सामाजिक परिष्कार की है, जिस प्रकार व्यक्ति टीके के प्रयोग द्वारा अनेक रोगों के प्रकोप से बचे रहने का प्रयास करता है, उसी प्रकार व्यंग्य अपने प्रहार एवं आक्षेपों से सामाजिक दोषों के निराकरण के लिए शक्तिशाली मोर्चा तैयार करता है। सामाजिक आचरणों, प्रचलित कुरीतियों एवं अन्य बहुविधि विकृतियों के मैल को व्यंग्य उसी प्रकार साफ कर देता है जिस प्रकार एक अच्छा साबुन किसी वस्त्र या वस्तु के मैल को काट फेंकता है। डॉ. शान्ति रानी ने व्यंग्य के इसी प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए लिखा है -

‘‘व्यंग्य किसी संस्था, समाज, व्यक्ति अथवा समूह की दुर्बलताओं तथाअवगुणों का उद्घाटन कर उस पर आक्षेप करता है।’’2

व्यंग्य को प्रहारात्मक शक्ति एवं सुधार की चर्चा करते हुए जेम्स डे ने लिखा है - ‘‘बिजली की कड़क अनाचारी को भयभीत करती है और साथ ही वायु को शुद्ध भी करती है - पूरी ईमानदारी के साथ लिखे गये श्रेष्ठ व्यंग्य का भी यही स्वरूप है।’’3

व्यंग्य का धर्म कटाक्ष करना होता है। इसके अंतर्गत सामाजिक रुढ़ियों और कुरीतियों पर जैसा मार्मिक और तीक्षण प्रहार किया जाता है, वैसा न तो धार्मिक उपदेशों की परम्पारिक प्रणाली द्वारा संभव है और न राजनीतिक उपदेशों द्वारा ही संभव है। कहीं-कहीं तो व्यंग्य कुनैन से भी अधिक कड़वा बनकर सामने आता है। अपने परिष्कारक लक्ष्य के प्रयोजन की सिद्धि के लिए व्यंग्य को और प्रहारात्मक बनना पड़ता है। व्यंग्य सुधारवाद का एक अंगमात्र मानना भूल होगी।

कन्हैया लाल नन्दन ने इसी ओर संकेत करते हुए ठीक ही लिखा है -

''व्यंग्यकार का काम समाज सुधार का डंका बजाना नहीं है, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में फैली सड़ाध को सुधी पाठक को पेश कर देता है ताकि वह अपने मन में विकृत्तियों के सामने खड़े होने का मानसिक साहस पा सके।''4

वास्तव में व्यंग्यकार का उद्देश्य सुधार करना मात्र नहीं होता, अपितु सुधार की अपेक्षा वह उन विसंगतियों और विकृत्तियों को जो समाज की सुख-समृद्धि और विकास के मार्ग में रोड़े अटकाती है, उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना उसका उद्देश्य होता है। व्यंग्य के इसी प्रयोजन की ओर संकेत करते हुए वर्तमान समय के व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने लिखा है -

''मैं सुधार के लिए नहीं, बदलने के लिए लिखना चाहता हूं, याने कोशिश करता हूं। चेतना में हलचल हो जाए, कोई विसंगति नजर के सामने आ जाए,इतना काफी है।''5

व्यंग्यकार नैतिकता का हितायती होता है, इसलिए समाज और संसार में दिखायी देने वाली किसी भी प्रकार की अनैतिकता उसे सहन नहीं होती। किसी भी स्तर पर किसी भी प्रकार की अनैतिकता उसकी चेतना में हलचल पैदा कर देती है, उसके भीतर में आक्रोश को जन्म देती है और फिर उस अनैतिकता के समूल विनाश के लिए व्यंग्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से उसी प्रकार की हलचल मचा देना चाहता है, यही व्यंग्य का प्रयोजन है और इस प्रयोजन की सिद्धि तभी संभव हो पाती है जब व्यंग्यकार जीवन की वास्तविकताओं के साथ गहराई से जुड़ा होता है। व्यंग्य के माध्यम से जन-जीवन में जागृति लाने का कार्य जीवन के यथार्थ साक्षात्कार के बिना संभव नहीं है। जिस व्यंग्य-लेखक की जीवन की पकड़ जितनी गहरी होगी वह उतना ही अधिक सटीक और शक्तिशाली व्यंग्य की रचना कर सकने में समर्थ हो सकेगा। गिलबर्ट हाईट ने व्यंग्य की इसी विशेषता को उजागर करते हुए अपने विचारों की अभिव्यक्ति इस प्रकार की है - ''व्यंग्य की केन्द्रीय समस्या वास्तविकता के साथ उसके संबंध की है। व्यंग्य मानव समाज को प्रकट, आलोचित और लज्जित करना चाहता है, साथ ही वह पूर्ण वास्तविकता अभिव्यक्त करने का दम भरता है और कुछ नहीं मात्र वास्तविक सत्य।''6

यथार्थ की अभिव्यंजना करते समय व्यंग्य को समाज का निकटतम दर्शक और आलोचक बनना पड़ता है। व्यंग्य को एक साथ अनेक मत, स्थितियों से होकर गुजरना पड़ता है। चारो ओर व्याप्त कुरीतियों एवं उनका जन्म आक्रोश को एक आदर्शवादी की दृष्टि से देखना व्यंग्यकार का काम नहीं है। न ही व्यंग्य सामाजिक विदूपताओं को दिखाने वाला केवल आईना भर है, वह इस विदूपताओं और विवशताओं के स्थान पर सौजन्यपूर्ण वातावरण के निर्माण की परिकल्पना करता है।

वास्तविकता और यथार्थ व्यंग्य का सहचरी बन सामने आती है, तब उसका प्रभाव और दंश दीर्घकालीन और गहरा होता है। इसीलिए कुशल व्यंग्यकार यथार्थ के सहारे सामाजिक अनाचारों और कमियों के विरुद्ध अपना आंदोलन छेड़ता है। यद्यपि व्यंग्य का जन्म हीनता, ईष्र्या, करुणा, क्रोध आदि अनेक मानसिक अवस्थाओं में भी होता है, परन्तु सच्चे व्यंग्य का उद्भव चेतना पर बहने वाले विशिष्ट आघात के कारण ही होता है। हीनता, ईष्र्या, क्रोध आदि विविध मानसिक अवस्थाओं में व्यंग्य का समस्यादर्शी और परिवर्तनकारी स्वरूप नहीं उभर पाता है। वास्तव में ये विसंगति पूर्ण जीवनगत परिस्थितियां ही व्यंग्य को प्रकट करती हैं और उद्भूत जीवन दृष्टि से सम्पन्न लोगों की चेतना पर प्रहार करती है।

विवेकशील व्यक्ति के समक्ष व्यंग्य का सहारा लेने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं रह जाता।

कैशव चन्द्र वर्मा ने इस संदर्भ में लिखा है -

''सामाजिक विद्रूप के प्रति यदि कोई प्रतिक्रिया व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त की जा सकी, तो शायद यही विकल्प रह जायेगा कि व्यक्ति एंग्रीमैन होकर जेलखाने और पागलखाने के बीच घूमता रह जायेगा।''7

व्यंग्यकार नैतिकता का पोषक और प्रगतिशील दृष्टि वाला होता है। इस कारण समाज में जहां कभी भी उसे नैतिकता के स्थान पर अनैतिकता, संगीत के स्थान पर विसंगति, समता के स्थान पर असमानता और सदाचार के स्थान पर दुराचार दिखायी देता है, तो उसके हृदय में एक कचोट उद्भूत होती है और व्यंग्यकार की यही कचोट व्यंग्य की जननी है। ऐसे वातावरण में उत्पन्न व्यंग्य का लक्ष्य समस्या का निवारण होता है। समस्याओं का जाल सचेतन व्यक्ति के मानस में द्वन्द्व का सृजन करता है तथा करुणा, आक्रोश परिहास आदि के भाव उद्दीप्त होकर वह व्यंग्य का आश्रय लेना उसकी अनिवार्य विवशता होती है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन शब्दों में अपना अभिमत व्यक्त किया है -''व्यंग्य रचनाकार का अत्यन्त प्रभावशाली अस्त्र है। हर श्रेष्ठ रचना में उपरेल स्वर की सूट मान्यताओं का खोखलापन दिखाने के लिये और अंतल गाम्भीर्य में रहने वाली वास्तविकता को अनुभव कराने के लिए इसका प्रयोग किया गया है।'8

व्यंग्य का कार्य केवल सामाजिक आचरण के खोखलेपन को दिखाना और सत्य का दिग्दर्शन कराना ही नहीं है। इन प्रत्यक्ष कार्यों के सामान्तर वह अन्य पहलूओं पर भी प्रकाश डालता है। व्यंग्यकार जन-जीवन की चेतना को झकझोर कर जागरण लाने के उद्देश्य से लोगों की संवेदनशीलता को कुरेदता है। आर्थर पोलाई ने व्यंग्यकार के इसी धर्म की इन शब्दों में व्याख्या करते हुए लिखा है - ''इसका उद्देश्य अपने पाठकों की निन्दा और आलोचना में प्रवृत्त होने के लिए जगाना है और यह काम वह उन्हें परिहास, अभिहात्य, अपमान, क्रोध और घृणा की विविध भावात्मक अवस्थाओं, में भटकाकर पूरा करता है।''9

निश्चय ही व्यंग्य एक सोद्देश्य रचना है, जिसके पीछे एक बलवती प्रेरणा एवं निश्चित योजना होती है। व्यंग्य की यह प्रयोजनशीलता ही उसे ईमानदारी, सच्चा और संवेदनशील सिद्ध करता है। वस्तुतः सामाजिक विसंगतियों-अत्याचारों और अनाचारों पर प्रहार करके व्ंयग्यकार न केवल उनको चुनौती देता है, अपितु वह इन विसंगतियों से युक्त जनमानस को चेतना और शक्ति भी प्रदान करता है जिस व्यंग्यकार की जीवन-दृष्टि जितनी उदार व्यापक और महान होगी, उतना ही प्रयोजननिष्ठ व्यंग्य रचनाओं में वह समर्थ हो सकेगा। निराश और हतोत्साहित समाज के लिए व्यंग्य ही आशा का संदेश होता है, उसमें स्फूर्ति जगाता है और संघर्ष के लिए प्रतिबद्ध करता है इसके लिए व्यंग्य का चुटीला होना आवश्यक है जो व्यंग्य जितना अधिक चुटीला और तीक्ष्ण प्रहारात्मक होगा, उसका प्रभाव भी उतना ही व्यापक और गहरा होगा। यह सच है कि सीधे-सीधे लम्बे-लम्बे व्यंग्य व्यक्ति को जितने प्रभावित नहीं कर पाते, जितने कि एक छोटा सा चुटीला वाक्य।

व्यंग्योक्ति से आहत व्यक्ति अन्दर ही अन्दर तिलमिलाता रहता है। सर्प के काटे व्यक्ति के समान फड़फड़ाता है और उसकी यह फड़फड़ाहट उसे कुछ करने के लिए विवश करती है। बढ़ती हुई विसंगतियों के इस दौर में व्यंग्य की प्रयोजनशीलता स्वतः स्पष्ट है। व्यंग्यकार का यह दायित्व है व्यंग्य की इस प्रयोजनशीलता का वह सही और प्रभावकारी रूप में प्रयोग करें। निराश और हतोत्साहित समाज के लिए व्यंग्य ही आशा का संदेश लाता है, उसमें स्फूर्ति जगाता है और संघर्ष के लिए प्रतिबद्ध करता है। स्पष्ट है कि श्रेष्ठ और सच्चा व्यंग्य अपने सही प्रयोजन के स्तर पर अपनी प्रासंगिकता तय करता है।

डॉ. आई0एन0 चन्द्रशेखर रेड्डी के अनुसार - ''श्रेष्ठ व्यंग्य एक ऐसी जीवन दृष्टि के रूप में विकसित होने की क्षमता रखता है, जिसमें जीवन के प्रति सहज ग्राह्य मानवीय भावनाओं का विकास हो सके।''10

संदर्भ :

1 डॉ. नागेन्द्र (सं0) मानविकी परिभाषिक कोश, साहित्य खण्ड, पृ0 225

2 डॉ. विरेन्द्र मेहदीरत्ता: आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य, पृ0 21

3 कन्हैयालाल नन्दन (सं0) श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएं पृ0 8

4 कन्हैयालाल नन्दन (सं0) श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएं पृ0 8

5 धर्म युग, 6 मार्च 1969, पृ0 61

6 गिलबर्ट हाईट: दि अनाटामी ऑफ सटायर, पृ0 158

7 साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 24 मार्च 1968, पृ0 9

8 धर्म युग, 6 मार्च 1969, पृ0 61

9 आर्थर पोलार्ड: सटायर पृष्ठ 158

10 डॉ. आई0एन0 चन्द्रशेखर रेड्डी: हिन्दी व्यंग्य साहित्य, पृ0 59

Contributors Details :

गरिमा चारण

शोध छात्रा,

हिन्दी विभाग जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर